जैतून की खेती साहबराम की जबानी

मैं साहबराम भारत एवं पाकिस्तान की सीमा पर श्रीगगांनगर जिले से लगभग 15 किलोमीटर दूर स्थित मदेरां ग्राम का निवासी हूॅ। हमारा पुश्तैनी धंधा खेती बाडी ही है और इसी की समृद्वि से मेरा और गॉव का गुजर बसर होता है। मेरे खेत से भारत की सीमा की तारबंदी लगभग 200 मीटर की दूरी है। सीमा पर तनाव के कारण हमारी खेती हमेशा से ही धाटे का सौदा रहा है। खेती की आमदनी कम होने के कारण गॉव के सभी लोग चाहते थे कि उनके बच्चे अच्छी शिक्षा प्राप्त कर सरकारी नौकरियो एवं अन्य व्यवसाय में जायें ताकि गॉव में समृद्वि आ सकें। इसके चलते मैने अपने बच्चो को अच्छी शिक्षा दिलवाने का निर्णय लिया और मेरा भतीजा दीपक वर्ष 2009 में उच्च शिक्षा के लिये आस्ट्रेलिया चला गया। आस्ट्रेलिया में शिक्षा के दौरान उसका भी रूझान हमेशा कृषि की ओर ही रहा जिसके कारण उसने आस्ट्रेलिया में कृषि के बारे में अधिक से अधिक जानकारी ज्ञान प्राप्त किया।

इसी दौरान आस्ट्रेलिया से जब उसके फोन आते तो वह हमेशा नयी नयी बाते बताता और वापस आने पर गॉव में उसे स्थानीय स्तर पर करने की बात करता। मै हमेशा उसकी बातो को हल्के में लेता था। एक दिन दीपक से बात करते समय उसने बताया कि जैतून की खेती से क्या फायदे है और कहा कि यह एक ऐसी फसल है जिसके कारण विश्व के कई देशो के किसानो की आर्थिक स्थिति सुदृढ हुयी है। उसने इसकी खेती के फायदो के दौरान यह बताया कि इसकी पिछले 50 सालो से मांग हमेशा बढती रही है, तेल को अधिक समय तक सुरक्षित रख पाने के कारण भाव निर्धारित करने में किसान मोल भाव कर सकता है, इसकी उम्र कई सैकडो साल होने के कारण लागत भी काफी कम होती है। इस प्रकार की बाते सुनने के बाद मैनें इसका जिक्र गॉव की चौपाल पर किया तो सभी भाइयो ने उत्सुकता जतायी।

तीन दिन बाद जब मुझे बताया गया कि राजस्थान सरकार जैतून की खेती करवा रही है तो उसका दोबार फोन आया तो मुझे अपने कानो पर विश्वास ही नहीं हुआ । मैनें अपने गॉव में इस पर फिर चर्चा कर किसानो का एक समूह बनाया । फिर भतीजे दीपक को साथ लेकर कृषि विभाग के श्रीगंगानगर, बीकानेर, झुॅझुनू, अलवर, नागौर एवं जयपुर जाकर जैतून के बागो को देखा ततसमय सरकार द्वारा पौधो को खेत में लगाया ही गया था। वर्ष 2009 से 2013 तक हमने कई बार जैतून के बागो को देखा, समझा तथा कृषि विभाग की विभिन्न संगोष्टीयो

में भी भाग लिया। जब पहली बार 2013 में जैतून के फल लगे तो हमारे सपने साकार हो गये। और मैनें निर्णय कर लिया कि हम जैतून की खेती करने वाले पहले किसान होगें।

वर्ष 2013 में हमने 10.00 हेक्टेयर क्षेत्र में जैतून के पौधो का रोपण किया, जब कागज के डिब्बो में हमारे खेत पर पौधे पहुचे तो पूरे गॉव को विश्वास ही नही हुआ कि पौधे भी कागज के डिब्बो में आ सकते है क्योंकि हमने आज तक प्लास्टिक की थैली में ही पौधे उगते देखे थें।

खेत में पौधे लगाते ही हमको अजीब से अनुभव हुये जैसे बीबीसी, सीएनएन जैसे अन्तराष्ट्रीय टी वी चैनलो के पत्रकार हमारे खेत पर आये, इन्टरव्यू का प्रसारण इसके बाद प्रमुख समाचार पत्रो में लेखो ने मुझे एक आम किसान से वी0आई0पी बना दिया।

वर्ष 2016 में हमारे खेत मे अरबिक्यूना एवं कोरटिना किस्मो में लगभग 8 किलोग्राम फल आये। विशेषज्ञो की सलाह के अनुसार हमने वे फल तोड दिये। वर्ष 2017 में इसी प्रकार मैं उम्मीद कर रहा हू कि लगभग 2.50 –3.00 लाख प्रति हैक्टेयर की आमदनी हो जायेगी। इसके अलावा मुझे एक जैतून की पत्तियो की चाय बनाने वाले ने भी सम्पर्क किया है कि वे जल्दी ही राजस्थान में जैतून की पत्तियो की चाय बनाने की फ्रेक्ट्री लगा रहे है जिसमें वे किसानो से पत्तियॉ खरीदेगें।

आज हमारे खेत को देखकर कर श्रीगगांनगर मे लगभग 200 हेक्टेयर में जैतून के उद्यान लगाये गये है जो इस वर्ष और अधिक बढ जायेगें। किसान जितना नवाचार अपना सकेगा, उसकी आर्थिक स्थिति उतनी ही सुदृढ होगी।